दैवी विश्वसाम्राज्य
तुम्हारा ईश्वरीय
जन्म सिद्ध
अधिकार है

DEITY WORLD
SOVEREIGNTY
IS YOUR GODLY
BIRTHRIGHT

शिव रात्रि
BIRTH NIGHT

यह सारी सृष्टी की समस्त मनुष्य आत्माओं के पारलौकिक परमपिता निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप परमात्मा के स्वंय अपने दिव्य अवतरण का दिन है। औरों को मुक्ति या जीवनमुक्ति रूपी श्रेष्ठ प्राप्ति की याद दिलाता है।

यह अन्य सभी जन्मोत्सवों की तुलना में सर्वोत्कृष्ट है क्योंकि वे सभी जन्मोत्सव तो मनुष्यात्माओं अथवा देवताओं की याद में मनाये जाते हैं जबकि शिवजयंती मनुष्यों को देवता बनानेवाले देवों के भी देव, धर्मस्थापकों के भी परमपिता के अपने दिव्य और शुभ जन्म का स्मरणोत्सव है।

इस सदी के अंत के साथ साथ कल्प का अंत समीप आ रहा है

82 वर्ष पूर्ण हो गये शिव को इस धरा पर ज्ञान की गंगा बहाते अनेक आत्माओं के पाप मिटाते

शिवरात्री तो तुम युगों से मनाते आए आखिर उससे मिलोगे कब ??? कब आते हैं शिव भोलानाथ भगवान? शिव आते हैं कलियुग के अंत में जब सभी आत्माओं के वापस जाने का समय आ जाता है।
और वही समय आ गया है .....

सभी भक्तो को भक्ति का फल दे रहे हैं।

आओ जल्दी आओ शिवपिता से मुक्ति जीवन मुक्ति का आधिकार ले लो

सच्ची शिवरात्रि कैसे मनायें
वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है, विकार विष को छोड़कर शिव पिता से प्रीति जोड़ो
बेहद के निराकार बाप परमात्मा। शिव से स्वर्ग का वर्सा लो
शिव को याद करो तो पाप मिट जायेंगे व पावन देवता बनेंगे
ज्ञान कलश से ही स्वर्ग के द्वार मिलते हैं
बुद्धि रूपी कलश
और सभी को जीवनमुक्ति प्रदान होती है।
वर्तमान समय ही रात्रि है।
हमें आत्मा का जागरण करना चाहिए, ब्रह्मचर्य व्रत के साथ शुभ व श्रेष्ठ वृत्ति धारण करने का व्रत लेना चाहिए। शिव के प्रति ज्ञान का बिन्दु-बिन्दु निरंतर प्रवाहित करते रहना चाहिए। शिवरात्रि मनाने की इसी सच्ची रीति को अपनाकर हमें अवढरदानी शिवबाबा से इसी जन्म में मुक्ति व जीवनमुक्ति के सर्वश्रेष्ठ वरदान लेलेने है
बलि चढ़ना याने मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित
आक, धतूरा चढ़ाना याने विषयों, विकारों को चढ़ाना
ज्ञान
ज्ञान
धतूरा
बेल पत्र
तन
मन
धन
ज्ञान ही वह सोमरस है जिसके द्वारा आत्मा को शीतलता तथा शांति उपलब्ध होती है।
ज्ञान गंगा जिससे आत्मा पावन बनती है
त्रिशूल अर्थात स्व, बाप व ड्रामा की स्मृति तीनों ताप मिटाने वाले
ज्ञान नेत्र
ज्ञान डमरु द्वारा दिव्यता आध्यात्मिकता
विकार रूपी सर्प को अधीन किया
काम क्रोध वश कर एकरस आसन में स्थित
आत्मदर्शन रूपी चक्र
शंख रूपी मुख द्वारा ज्ञान युक्त मधुर बोल
ज्ञान गदा द्वारा बुराई समाप्त करना
कमल की भांति निर्लिप्त
विष्णु समान दैवीगुण धारण करो
शंकर समान योगमूर्त तपस्वी बनो।
शंकर
विष्णु
ब्रह्मा
र
च
ना
परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव
रचयिता
ब्रह्मा द्वारा गीता ज्ञान व राजयोग सीखाकर पतित मनुष्य से पावन देवता बनाता हूँ
लिंग → ल अर्थात् लय (विनाश) और ग अर्थात् गमन (नई रचना), शिव यह दोनों कार्य कराने वाले हैं इसलिए ज्योतिर्लिंग कहा है शिवलिंग शिव की प्रतिमा है न कि ब्रह्माण्ड की
शिव ने बद्ध आत्माओं रूपी पशुओं को माया के पाशों से मुक्त किया इसलिए उनका नाम पशुपतिनाथ अथवा मुक्तेश्वर हुआ, मनुष्यों के दुःखों को हरा इसलिए हर अथवा दुःखहर्ता कहलाये
आदिदेव
पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा
अकाल तख्त अथवा भागीरथ जिनके शरीर रूपी रथ द्वारा शिव ने गीता ज्ञान गंगा प्रवाहित की

गीता ज्ञान द्वारा सतयुग में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ
अत: गीता श्रीकृष्ण की माता व शिव पारलौकिक पिता हैं

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

श्रीमद्भगवद गीता सर्व शास्त्र शिरोमणि

सच्चा गीता ज्ञानदाता

प्रजापिता ब्रह्मा

गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने द्वापर अंत में
युद्धक्षेत्र में रथ पर सवार होकर जनसंहार हेतु
नहीं दिया था बल्कि निराकार परमपिता परमात्मा
शिव ने सृष्टीरूपी कर्मक्षेत्र पर प्रजापिता ब्रह्मा
(अर्जुन) के शरीर रूपी रथ पर सवार होकर
माया (विकारों) से युद्ध करने की शिक्षा दी

ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव

शिव भगवानुवाच:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥

- कलियुग अंत मे व सतयुग के आदि अर्थात् संगमयुग में जब धर्म की अति ग्लानि व अधर्म की वृद्धि होती है तब पुन: सतधर्म (सनातन देवी-देवता धर्म) की स्थापना व अधर्म का विनाश हेतु भारत में साधारण वृद्ध तन (प्रजापिता ब्रह्मा) के तन में अवतरित हो प्राय: लुप्त हुई गीता ज्ञान एवं प्राचीन राजयोग की शिक्षा देता हूँ।

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

- देह सहित देह के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझ मुझ एक परमपिता परमात्मा (शिव) को याद करो तो तुम्हारे विकर्म (पाप) नष्ट हो जायेंगे।

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥

- मेरे जन्म और कर्म दिव्य याने प्राकृत नहीं हैं ऐसे जो निश्चय करके जानता सो देह को त्यागकर पुनर्जन्म नहीं लेता है

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायण: ॥

- अपने को आत्मा समझ मुझ रचयिता परमात्मा (बाप) को याद करो और बुद्धि में लक्ष्य श्रीकृष्ण अथवा सुखधाम की स्मृति रखो तो 21 जन्मों के लिए स्वर्ग राज्य अधिकारी बनोगे।

नष्टो मोह: स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत
स्थितोऽस्मि गतसंदेह: करिष्ये वचनं तव ॥

- एक मेरी ही स्मृति में रहो, किसी भी व्यक्ति, वैभव, वस्तु, देह और देह के संबंध में बुद्धि (मोह) न जाये। एक मुझे ही याद करो तो पतित से पावन बन जाओगे

गीता के भगवान का मनुष्यात्माओं प्रति यही संदेश है - पवित्र बनो और योगी बनो; अब कलियुग जा रहा है, सतयुग आ रहा है; मुझ परमपिता से संपूर्ण पवित्रता, सुख व शांति का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करो।

द्वादश ज्योतिर्लिंग का रहस्य

निजानंद स्वरूपम शिवोऽहम
ज्ञानस्वरूपम शिवोऽहम
प्रकाश स्वरूपम शिवोऽहम

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

कलियुग के अंतिम समय में जब धर्म ग्लानि, अधर्म वृद्धि हो चुकी है तब पुनः सत्धर्म की स्थापना अधर्म का विनाश हेतु गीता भगवान निराकार शिव परमात्मा की प्रजापिता ब्रह्मा तन में दिव्य अवतरण 1937 में हो चुका है

शिव भगवानुवाच :- **मेरा नाम** :- सदाशिव. **मेरा रूप** :- ज्योति स्वरूप · **मेरे गुण** :- ज्ञानसागर पतित पावन
मेरा धाम : परमधाम वा शिवलोक. **मेरा अवतरण समय** :- कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग
मेरे कर्तव्य : ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना, विष्णु द्वारा स्वर्ग की पालना, शंकर द्वारा कलियुगी नर्क का विनाश

शिव का अर्थ है - '**कल्याणकारी**'। परमात्मा का यह नाम इसलिए है, वह **धर्म-ग्लानि** के समय जब सभी मनुष्यात्माएं **माया (पांच विकारों)** के कारण **दुःखी**, **अशान्त**, पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तब उनको **पुनः पावन तथा सम्पूर्ण सुखी** बनाने का **कल्याणकारी कर्तव्य** करते हैं।
शिव ब्रह्मलोक में निवास करते हैं और संसार का उद्धार करने के लिए **ब्रह्मलोक** से नीचे उतरकर एक मनुष्य के शरीर का आधार लेते हैं। परमात्मा शिव के वृद्ध तन में अवतरण अथवा वे जो साधारण एवं वृद्ध मनुष्य के तन में अवतरित होते हैं, उसको वे परिवर्तन के बाद **प्रजापिता ब्रह्मा** नाम देते हैं। उन्हीं की याद में शिव की प्रतिमा के सामने उनका **वाहन नंदीगण** दिखाया जाता है। क्योंकि वे तो स्वयं ही सब के माता-पिता हैं, मनुष्य-सृष्टि के चेतन बीज रूप हैं और जन्म-मरण तथा कर्म-बन्धन से रहित हैं इसलिए वे किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते बल्कि ब्रह्मा के तन में **परकाया प्रवेश** ही उनका **दिव्य जन्म** अथवा **अवतरण** है।
परमात्मा शिव के इस अवतरण अथवा दिव्य एवं अलौकिक जन्म की पुनीत-स्मृति में ही **शिवरात्रि अथवा शिवजयन्ती** का त्यौहार मनाया जाता है।

द्वापरयुग और कलियुग के समय को '**रात्रि**' कहा जाता है (**ब्रह्मा की रात्रि**)।
रात्रि वास्तव में **अज्ञान**, **तमोगुण** अथवा **पापाचार** की निशानी है।
कलियुग के अंत में, जबकि साधु, संन्यासी, गुरु, आचार्य इत्यादि सभी मनुष्य **पतित तथा दुःखी** होते हैं, जब धर्म की **ग्लानि** होती है, जब सारी सृष्टि **माया** (अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि पांच विकारों) के पंजों में फंस जाती है जब यह भारत विषय-विकारों के कारण **वेश्यालय** बन जाता है तब **पतितपावन** परमपिता परमात्मा **शिव**, जो कि आवागमन के चक्कर से मुक्त हैं इस सृष्टि में **दिव्य-जन्म** लेते हैं तथा मनुष्यात्माओं को पवित्रता, सुख और शांति का वरदान देकर **माया के पंजे** से छुड़ाते हैं। वे ही **सहज ज्ञान** और **राजयोग** की शिक्षा देते हैं तथा सभी आत्माओं को **परमधाम** में ले जाते हैं तथा **मुक्ति एवं जीवनमुक्ति** का वरदान देते हैं। इसलिए अन्य सबका जन्मोत्सव तो '**जन्मदिन**' के रूप में मनाया जाता है परन्तु परमात्मा **शिव** के **जन्मदिन** को '**शिवरात्रि (BIRTH-NIGHT)**' ही कहा जाता है।
जब इसप्रकार अवतरित होकर ज्ञान-सूर्य परमपिता परमात्मा **शिव ज्ञान-प्रकाश** देते हैं तो कुछ ही समय में ज्ञान का प्रभाव सारे **विश्व** में फैल जाता है और कलियुग तथा तमोगुण के स्थान पर **सतयुग और सतोगुण** की स्थापना हो जाती है और **अज्ञान-अन्धकार** का तथा **विकारों** का **विनाश** हो जाता है और थोड़े ही समय में यह सृष्टि **वेश्यालय** से बदलकर **शिवालय** बन जाती है और **नर** को **श्रीनारायण पद** तथा **नारी** को **श्री लक्ष्मी पद** की प्राप्ति हो जाती है।

परमात्मा शिव अवतरित होकर अपने **ज्ञान, योग तथा पवित्रता** द्वारा आत्माओं में आध्यात्मिक **जागृति** उत्पन्न करते हैं। इसी महत्व के फलस्वरूप भक्त लोग **शिवरात्रि** को **जागरण** करते हैं। इस दिन मनुष्य **उपवास, व्रत** आदि भी रखते हैं। **उपवास** (**उप**-निकट, **वास**-रहना) का वास्तविक अर्थ है - **परमात्मा के समीप हो जाना**। अब परमात्मा से **मुक्त** होने के लिए **पवित्रता** का **व्रत** लेना जरूरी है।

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग स्थापना

विष्णु द्वारा सतयुगी स्वर्ग की पालना

शंकर द्वारा कलियुगी नरक का विनाश

Shiva, The Incorporeal God is known as Trimurti (त्रिमूर्ति) because he is the creator of the Divine Triad Brahma, Vishnu and Shankar

शिव वह

जटाधारी, सर्पधारी, चन्द्रधारी, व गंगाधारी **शंकर नहीं** बल्कि उनके भी रचयिता **ज्योतिबिन्दु निराकार** हैं। 'शिव' का एक शाब्दिक अर्थ '**बिन्दु**' भी है बिन्दु अर्थात **अतिसूक्ष्म**....। जो अति सूक्ष्म है, वही सर्वशक्तिवान भी है। उसी में सम्पूर्ण ज्ञान भी समाया हुआ है. **ज्योतिबिंदु परमात्मा का प्रतीक** शिवलिंग **है जबकि शंकर प्रकाशमय आकारी देवता हैं। शिव** योगेश्वर हैं - **शंकर** योगीमूर्त हैं। **शिव** रचयिता हैं। **शंकर** रचना हैं। **शिव** पिता हैं। **शंकर उनके** पुत्र हैं। परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर **प्रजापिता ब्रह्मा** के माध्यम से कर्म करते हैं.... वे **अकर्ता** नहीं, परन्तु उनके कर्म दिव्य हैं। यदि वे कुछ भी न करते तो उनका अस्तित्व ही क्या होता, उनका महत्व व उनकी महिमा ही क्यों होती ? उन्हें कोई क्यों पुकारते.

क्या हैं उनका दिव्य कर्त्तव्य : कर्त्तव्य तो मनुष्य, महान पुरुष और देवता भी करते हैं, परन्तु **भगवान जो दिव्य कर्त्तव्य करते हैं, ऐसा अन्य कोई नहीं कर सकता।**

उनके दिव्य कर्त्तव्य, न केवल **स्थापना, पालना, विनाश** है. बल्कि वे आकर सभी को **संपूर्ण ज्ञान** देते हैं मन का **अंधकार** हरते हैं। विकारों और पापकर्मों पर विजय पाने के लिए **राजयोग** सिखाते हैं। और सभी को **संपूर्ण पावन** बनाकर वापस **मुक्तिधाम** ले जाते हैं। उनके कर्म दिव्य इसलिए भी हैं क्योंकि कर्म करते भी वे कर्म के **बन्धन** में नहीं आते। निष्कामभाव से कर्म करते हैं। देह में आते भी वे देह के बन्धन में नहीं आते अर्थात वे प्रकृति को **अधीन** रखते हैं।

विकारी, अपवित्र दुनिया को **निर्विकारी पावन दुनिया** बनाना **वेश्यालय** को **सच्चा-सच्चा शिवालय** बनाना **कलियुग दुःखधाम** के बदले **सतयुग सुखधाम** की स्थापना करना केवल सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा **शिव** का ही कार्य है।

अब कल्प के वर्तमान संगमयुग में अवतरित होकर, फिर से वही कर्त्तव्य परमपिता परमात्मा शिव कर रहे हैं। **82** वर्ष पूर्ण हो गये, शिव को इस धरा पर **ज्ञान गंगा** बहाते, अनेक आत्माओं के पाप मिटाते। उन्होंने एक शक्तिशाली **अलौकिक सेना** (शिव-शक्तियाँ) तैयार कर दी है जो आने वाले थोड़े ही वर्षों में इस सृष्टि की **कायाकल्प** कर देगी।

मृत्यु से कौन छुड़ा सकता है : मृत्यु से वही छुड़ा सकता है जो **मृत्यु से भी बलवान्** अर्थात **मृत्युंजय हो।** काल से भी वही बचा सकता है जो **कालों का भी काल हो।** कर्मों के दण्ड व बन्धन से मुक्त वही कर सकता है, जो कर्मों की **गहनगति** को जानता हो और स्वयं इनके बंधन से **सदा मुक्त** हो। मनुष्य से देवता वही बना सकता है जो **देवों का भी देव हो।** अतः संसार में सहायता भले ही कोई मनुष्य दे सकता हो **मुक्ति और जीवनमुक्ति का दाता** एक परमपिता-परमात्मा **शिव** को ही **मृत्युंजय अथवा अमरनाथ** भी कहा जाता है। वे इस धरा पर अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को **ज्ञानामृत** पिला रहे हैं जो पीने से **21 जन्मों तक हमें काल नहीं खा सकता।** **शिवरात्रि पर जागरण तो करते आये** अब अन्तःकरण को जगाओ तो इन्तजार की घड़ियाँ पूर्ण हो जायेंगी। **आप शिव पर जन्म-जन्म दूध व जल चढ़ाते आये,** अब वह अमृत पिला रहा है, अमर देवता बनाने के लिए। **अमृत अर्थात ज्ञान। ज्ञान ही तो प्रकाश है।** जिसके मिलने पर ही सद्गति सम्भव है। हे भक्तों अब जान लो... **स्वयं ज्ञानसागर शिव से।** **आप घण्टी बजा-बजाकर शिव को जगाने का प्रयास करते रहे** और खुद सोये रहे, **अब शिव तुम्हें जगा रहा है।** जागो **अब सोने वाले भाग्य को** खोने वाले बन जायेंगे अब **आत्मजागृति का समय है।** **रात्रि जागकर, भांग आदि पीकर भोलेनाथ को रिझाते रहे।** **भांग पीने से नशा तो चढ़ गया, पर ईश्वरीय नशे या नारायणी नशे की अनुभूति तो नहीं हुई** जिससे **दुःख, तनाव, चिन्तायें, व व्यसन नष्ट हो जाते हैं।** **अब भोलानाथ सच्चा ईश्वरीय नशा चढ़ाकर जीवन को आलोकित कर रहा है।** सच्ची शिवरात्रि तभी मनेगी जब हम प्यारे भोलानाथ शिव पिता द्वारा पिलाये गये ज्ञानामृत को पीकर, अपना जीवन श्रेष्ठ, हीरे तुल्य बनायेंगे। समस्त विकृतियों को समाप्त करेंगे, अपने साधारण जीवन स्तर को श्रेष्ठ बनाकर धरती पर स्वर्ग का वायुमण्डल तैयार करेंगे।

खुशखबरी : परमात्मा शिव अपना दिव्य कार्य कर रहे हैं, अब उनका ताण्डव नृत्य भी प्रारम्भ होने ही वाला है। स्वयं शिव से सत्य ज्ञान प्राप्त कर मिलन के अधिकारी बनें, मन का अंधकार दूर करें। **राजयोग** सीखकर दुःखदाई विकारों से मुक्त हों पूरे कल्प में केवल एक ही बार यह भाग्य मिलता है।

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

परमपिता परमात्मा द्वारा
विश्व के सभी आत्माओं प्रति दिव्य संदेश
कलियुगी कौड़ी जैसे पतित मनुष्य से सतयुगी हीरे जैसा पावन बनने का तथा एक सेकंड में स्वर्ग का राज्यअधिकार प्राप्त करने का निमन्त्रण

'शिव' परमात्म्याचे (ॐकार, अल्लाह, GOD, जेहोवा) दिव्य अवतरण 'प्रजापिता ब्रह्मा' यांच्या शरीरात झाले आहे. २१व्या शतकात सुवर्ण भारताची निर्मिती करण्यासाठी 'शिव परमात्मा' हाच संदेश दत आहे प्रिय वत्सांनो, स्वतःला आत्मा समजून माझी आठवण करा म्हणजे तुमच्या विकर्मांचा विनाश होईल व तुम्ही पावन बनून पावन सृष्टीचे अधिकारी बनाल

-मोह नष्ट अपने को आत्मा समझ, मुझ बाप को याद करो, तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम पावन (Holy) बन पावन दुनिया (स्वर्ग) के मालिक बनेंगे

RENOUNCE ALL BODILY RELIGION, REMEMBER THAT YOU ARE SOULS, REMEMBER YOUR ORIGINAL HOME (SOUL WORLD - MUKTIDHAM) & HAVE COMMUNION WITH ME, ONLY BY REMEMBERING ME YOUR SINS WILL BE DESTROYED AND YOUR SOUL CAN BE PURIFIED.

- सर्व आत्माओं का परमपिता एक है और निराकार है। वह ज्योति बिंदु स्वरूप है। उनका नाम सदाशिव है। वे सर्वव्यापक नहीं बल्कि ब्रह्मलोक के वासी हैं। उनको शिवलिंग अथवा ज्योतिलिंग के रूप में पूजते हैं तथा जन्मदिन शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। परमात्मा शिव ही ज्ञान के सागर, पतितपावन गीताज्ञानदाता, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के भी पिता तथा रचयिता होने कारण उन्हें त्रिमूर्ती कहते हैं। वे जन्म मरण रहित हैं। उनका अवतरण कलियुग के अंत और सतयुग के आरंभ का संगम अर्थात् संगमयुग पर होता है। वे साधारण वृद्ध मनुष्य (ब्रह्मा) के तन में प्रवेश कर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करवाते हैं तथा शंकर द्वारा पुरानी कलियुगी दुनिया का विनाश करवाते हैं।

- हम सब आत्मायें भी उसी एक परमात्मा की संतान, निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप हैं आत्मा भृकुटि (Between Eyebrows) में रहती है तथा आपस में भाई-भाई का संबंध है आत्मा अधिकतम 84 जन्म लेती है। अब सभी आत्मायें जन्म लेते पतित (Degraded) हो गई है तथा अपने वास्तविक घर मुक्तिधाम-SOULWORLD - सूर्य चंद्र तारों के पार, सुनहरे लाल प्रकाश वाली दुनिया को भूल गई है जहां से वह इस मनुष्य सृष्टि पर समयानुसार पार्ट (Part) बजाने आती है व विनाश के पश्चात् शिव पिता के साथ पुनः चली जाती है आत्मा परमात्मा नहीं हो सकती क्योंकि परमात्मा एक ही है और सदासत्य (EverTruth) सदा पवित्र (Everpure) तथा जन्ममरण रहित हैं।

- गीता ही सर्वशास्त्र शिरोमणि है, जो परमात्मा शिव द्वारा कलियुग अंत व सतयुग आदि (संगमयुग) पर दिया जाता है जिसकी श्रीमत को धारण कर नई पावन दुनिया (सतयुग अथवा स्वर्ग) में श्रीकृष्ण का जन्म होता है। वस्तुतः शिव परमात्मा श्रीकृष्ण के भी पारलौकिक पिता हैं।

(●) सद्गतिदाता कोई मनुष्य हो नहीं सकता। अनेक जन्म गंगा स्नान करने पर भी, अनेक तरह से मंत्र, व्रताचरण, शास्त्र इत्यादि पठन, दानादि करने पर भी, इसी तरह सैकड़ों जन्म लेने पर भी ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती है। दुःखसागर बने हुए इस विश्व में पापात्माएँ, पुण्यात्माएँ महात्माएँ, धर्मात्माएँ, देवात्माएँ आदि सभी परमात्मा की आराधना करते हैं और वे जन्म-मरण चक्र में आते हैं। उन्हें परमात्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं है। इनमें से कोई भी परमात्मा नहीं हैं। आत्माएँ अनेक हैं व माता के गर्भ द्वारा जन्म-मरण के चक्र में आती है। इसलिए पावन से पतित भी बनती है। परमात्मा एक है व जन्म-मरण रहित है, सदा सत्य, सदा पवित्र हैं। आत्माएँ रचना व परमात्मा रचयिता है। इसलिए सभी पतित आत्माओं को पावन बनाने, दुःखों से मुक्त (Liberate) करने तथा सभी आत्माओं को घर-मुक्तिधाम का रास्ता बताने परमात्मा को अंतिम समय परमधाम-मुक्तिधाम से साकार मनुष्यलोक में अवतरित होना ही पड़ता है। तथा पुरानी, विकारी, अपवित्र दुनिया को नई, निर्विकारी, पावन दुनिया बनाने का अर्थात् कलियुग दुःखधाम (नरक) को बदले सतयुग सुखधाम (स्वर्ग) की स्थापना का अलौकिक कर्तव्य करना पड़ता है।

(●) यह सृष्टिरूपी अनादि नाटक हर कल्प (5000 वर्षों) के बाद हुबहू पुनरावृत्त (Repeat) होता ही रहता है। यह चार युग (EPOCHS) सतयुग (स्वर्णयुग - GoldenAge), त्रेतायुग (रजतयुग - SilverAge) द्वापरयुग (ताम्रयुग - CopperAge), कलियुग (लोहयुग - IronAge) में विभक्त (बँटा) है। प्रत्येक युग 1250 वर्षों का होता है। सतयुग, त्रेतायुग को स्वर्ग (Heaven) और द्वापर कलियुग को नरक (Hell) कहते हैं। स्वर्ग में पूज्य, सर्वगुण संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी, पावन देवी देवतायें रहते हैं तदानुसार प्रकृति भी सतोप्रधान सुखदायी होती है। उसे शिवालय या श्रेष्ठाचारी दुनिया कहते हैं। वहाँ भक्ति, शास्त्र, रोग, अपमृत्यु, 5 विकार होते नहीं इसलिए ब्रह्मा का दिन कहा है इसके विपरीत नरक (द्वापर कलियुग) में अवगुणी, विकारी, रोगी, दुःखी, मनुष्य (पूजारी) रहते हैं तथा प्रकृति भी रजो-तमोप्रधान दुखदायी होती है। इन दोनों युगों में संसार की दुःख दूर करने धर्मात्माओं, महात्माओं, साधु संतों का आगमन होता है। शास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र मंदिर इत्यादि बनना शुरू होते हैं। यही भ्रष्टाचारी दुनिया अथवा ब्रह्मा की रात है।

(●) परमात्मा शिव अपने वायदेनुसार 5000 वर्ष बाद पुनः कलियुग अंत में सृष्टि को परिवर्तित करने, तथा सभी आत्माओं को पतित से पावन बनाने, पाँच विकारों रूपी रावण के चंगुल से छुड़ाने, मुक्ति-जीवनमुक्ति रूपी शांति-सुख का वसा देने, वापस वास्तविक घर (Original Home) ले जाने आये हैं। आप भी अपने पारलौकिक पिता को पहचान इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में पाँच विकारों की आहुती दे तथा अपनी आत्मा तथा सृष्टि को पवित्र (Pure) बनायें जो केवल परमात्मा शिव (Supreme Soul) की याद (Remembrance) से ही संभव है। और किसी माध्यम या साधन से नहीं। याद से ही जन्म-जन्मांतर के विकर्म (पापों) का बोझ भस्म समाप्त होते हैं तथा सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं।

(●) आप अधिक जानकारी के लिए किसी भी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेंटर पर पधारकर यह निःशुल्क ज्ञान प्राप्त करें तथा अपनी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करें ताकि भविष्य में सतयुगी दैवी स्वराज्य का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करो। जहाँ स्वयं परमपिता शिव बाप के रूप में 21 जन्म स्वर्ग की वर्सा (Inheritance) देते हैं, टीचर बनकर दैवी गुण (Deity Qualities) धारण कराते हैं व सद्गुरु-Liberator बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। यह ज्ञान परमात्मा शिव केवल एकबार संगमयुग पर अपने आत्मारूपी बच्चों को देते हैं ताकि वे इस कलियुगी-नर्क से निकल सतयुगी स्वर्ग में आ सके जहाँ 100% Health, Wealth, Happiness है।

अभी नहीं तो कभी नहीं

NOW OR NEVER

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

शिव भगवानुवाच

हे वत्सों पाँच महा तत्वों की उपासना से, बलि चढाने से, देहदण्डन के योगो से मुझे तुम पा नही सकेंगे। जनन-मरण के चक्र में आनेवाले कोई भी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं है। मैं अजन्म, अयोनिज, जनन-मरण रहित, अहिंसक, अकाय, अव्यक्त चैतन्य, ज्योतिबिन्दु हूँ।

भारतीयों ने मुझ परमात्मा को "शिव" नाम से, पेरू देश में "शिवु" नाम से, बेबिलोनिया में 'शिवुन' नाम से, इजिप्त में 'सेव' नाम से, फिजी देश में 'सेवाजिया' नाम से, मुहम्मदीयों ने मक्का में 'संग-ए-अस्वद" (मक्केश्वर) के नाम से, इसाइयों ने 'जहोवा' नाम से और जपानियों ने 'चिनकीनसेकी' आदि नामों से विश्व में मेरा उपासना करते हैं

सर्व आत्माओं के एकैक पिता ज्योतिर्लींगम शिव परमात्मा

ज्योतिर्लींगम चैतन्य शिव परमात्मा का रूप ही लिंग के रूप में संगमेश्वर में भक्त शिरोमणि बसवण्णाने, रामेश्वर में राजा श्रीराम ने, गोपेश्वर में घनशाम श्रीकृष्ण ने, परमात्मा के रूप में तपस्वी देवता शंकर ने उपासना की है। ज्योतिर्लिंगम शिवपरमात्मा को गुरुनानक ने एकओंकार यसूख्रिस्त ने गाड जेहोआ, मोहम्मद पगंबर ने अल्ला खुदा, महावीर ने अरहन्त, बुद्ध ने दिव्य ज्योती (DIVINE LIGHT) कहा है।

परमात्मा ज्योतियों को भी ज्योति है। सर्व आत्मायें ज्योतिस्वरूप हैं। सर्व आत्म-ज्योतियों से भी सर्व श्रेष्ठ ज्योति, परमात्मा है। शिवपरमात्मा अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करनेवाले ज्ञानज्योति है। दिव्य अर्थात् स्वप्रकाश, परब्रह्म अर्थात् परंज्योति स्वरूप शिव परमात्मा चैतन्य है।

परमात्मा स्वप्रकाशस्वरूप स्वयंभु, परंज्योति होने के कारण द्वादश ज्योतिर्लिंग ज्योतिर्लिंगाकार परमात्मा की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं।

के मंदिरों में सोमनाथ (गुजरात), श्रीशैल में मल्लिकार्जुन (आन्ध्र प्रदेश)
सौराष्ट्र में महाकालेश्वर (मध्यप्रदेश), ओंकार में ममलेश्वर (मध्यप्रदेश)
उज्जयिनी में वैद्यनाथ (महाराष्ट्र), डाकिन्या में भीमेश्वर (महाराष्ट्र)
परली में रामेश्वर (तामिलनाडु), धारुकावन मे नागेश्वर (गुजरात)
रामेश्वर में विश्वेश्वर (उत्तर प्रदेश), गौतमीतट में त्र्यम्बकेश्वर (महाराष्ट्र)
वाराणासी में केदारेश्वर (हिमाचल प्रदेश), शिवालय में घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र)
हिमालय में

शिव भगवानुवाच : भारत में भक्ति के आदिकाल में मुझ एक शिव परमात्मा को ही पूजते थे। बाद में पौराणिक देवतायें जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और शक्तियों को पूजने लगे, फिर श्रीकृष्ण, श्रीराम जैसे भारत के पवित्र राजाओं तथा कालांतर में पंचतत्वों को (अग्नि, वृक्ष, जल) को फिर व्यक्ति पूजा, यहाँ तक कि समाधि आदि को भी पूजा करते हुए बहुदेवोपासक बन गये हो लेकिन अब ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा मेरा यथार्थ परिचय प्राप्त कर एकदेवोपासक बनो। मुक्ति व जीवनमुक्ति को प्राप्त करो।

शिव भगवानुवाच : मीठे बच्चे! मैं इस मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष का बीजरूप, सूरज, चांद सितारों से भी पार परमधाम निवासी हूँ। इस दुनिया में व्यापक नहीं हूँ। कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ में अर्थात पुरुषोत्तम संगमयुग में सभी को मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरदान देने अवतरित हुआ हूँ।

शिवभगवानुवाच

शिवभगवानुवाच : "हे वत्सो ! मैं नाम और रूप से न्यारा या सर्वव्यापी नहीं हूँ बल्कि मेरा नाम 'शिव' है और मेरा अव्यक्त स्वरूप ज्योति: बिंदु है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति' भी कहलाता हूँ। अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके पुन: सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग सिखा रहा हूँ। अत: अब आप पूर्ण पवित्र बनो और राजयोगी बनो तो मैं आपको 21 जन्मों के लिए आने वाली दैवी सृष्टि (वैकुण्ठ : स्वर्ग) में राज्य और भाग्य का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार दूँगा।"

शिवभगवानुवाच : मैं ऐकैक परमात्मा परमज्योति स्वरूप, अजन्म, अयोनिज, अकाया, अव्यक्त, अभोक्त, अहिंसक, जन्म-मरण रहित हूँ। मुझे ठीक न जानने वाले मेरे भोले भक्त अपनी सिद्धि के लिए अपने इष्ट देवताओं की भक्ति, ध्यान करते हैं। मुझ परमपूज्य की भोले भक्तों को ठीक पहचान न होने कारण पूजारीयों के पूजारी बने हैं।

शिवभगवानुवाच : स्थूल गंगा से सिर्फ शरीर के मैले को धो सकते हैं। इसलिए स्थूल गंगा में स्नान करनेवाले कोई भी पावन नहीं बने हैं। मैं शिव परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान दे रहा हूँ उस ज्ञान-गंगा में स्नान करनेवाले आत्मायें ही पापों से मुक्त होकर, पुण्यात्मा और देवात्मा बनते हैं।

सहज राजयोग : देहसहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल आत्मस्वरूप में स्थित होकर बुद्धि में ज्योतिबिंदु परमात्मा शिव की स्नेहयुक्त स्मृति स्थना ही वास्तविक योग है

बहनों और भाइयों ! यह कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग है (कलियुग अंत और सतयुग आदि का संगम) जो एक ही बार आता है जब परमपिता परमात्मा शिव आकर सब की गति-सदगति करते हैं

आत्मा निर्लेप नहीं है। आत्मा ही जैसे जैसे अच्छे वा बुरे कर्म करती है तो ऐसा ही फल पाती है। बुरे संस्कारों से पतित बन पड़ते है।

होवनहार विनाश के पहले बेहद के रूहानी बाप (शिव) को जानकर उनसे ही वर्सा लो।

शिवबाबा को याद करो तो पाप भस्म होंगे क्योंकि पतित पावन एक ही बाप है मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों गॉड-फादरली (बर्थराइट) जन्मसिद्ध अधिकार है

परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव

मुझ शिवपिता को और सुखधाम को याद करो तो पाप कट जायेंगे और फिर स्वर्ग में आ जायेंगे। जो जितना याद करेंगे उतना पाप कटेंगे